थार की धरती पर होगी अफ्रीकी 'मरामा बीन' की खेती की पड़ताल

एसकेआरएयू को तीन वर्षीय पायलट प्रोजेक्ट की मंजूरी

खाद्यान्न, तिलहन और पशु चारे के नए विकल्प तलाशेंगे वैज्ञानिक

पत्रिका
अतुल आचार्य
patrika.com

बीकानेर. पश्चिमी राजस्थान के शुष्क इलाकों में अब अफ्रीका की एक अनोखी दलहनी-तिलहनी फसल 'मरामा बीन' की संभावनाएं परखी जाएंगी। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय (एसकेआरएयू) को इस फसल पर तीन वर्षीय पायलट अनुसंधान परियोजना संचालित करने की स्वीकृति मिली है। कम वर्षा और रेतीली भूमि में उगने वाली यह फसल भविष्य में खाद्यान्न, तिलहन और पशु चारे का नया विकल्प बन सकती है।

यूनाइटेड किंगडम स्थित किकहाउस ट्रस्ट के वित्तपोषण से संचालित होने वाली यह परियोजना जुलाई 2026 से शुरू होकर तीन वर्षों तक चलेगी। इस पर 28.05 लाख रुपए खर्च किए जाएंगे। अनुसंधान निदेशक डॉ. एन.के. शर्मा ने बताया कि मरामा बीन दक्षिणी अफ्रीका की ऐसी फसल है, जो अत्यंत शुष्क परिस्थितियों में भी सफलतापूर्वक उगती है। इसके बीज प्रोटीन और तेल से भरपूर होते हैं, जबकि कंद (ट्यूबर) में पर्याप्त मात्रा में स्टार्च पाया जाता है।

नामीबिया से आएगा जर्मप्लाज्म, थार में होंगे परीक्षण

परियोजना के तहत मरामा बीन का चयनित जर्मप्लाज्म नामीबिया से भारत लाया जाएगा। इसके आयात की प्रक्रिया नेशनल ब्यूरो ऑफ प्लांट जेनेटिक रिसोर्सेज (एनबीपीजीआर) की निगरानी में सभी कानूनी एवं जैव-विविधता संबंधी मानकों का पालन करते हुए पूरी की जाएगी। वैज्ञानिकों का मानना है कि पश्चिमी राजस्थान की जलवायु इस फसल के लिए अनुकूल हो सकती है। इसी को परखने के लिए बीकानेर, रोजड़ी और झुंझुनूं में विभिन्न परीक्षण किए जाएंगे। परियोजना में डॉ. एन.के. शर्मा के साथ डॉ. दयानंद, डॉ. अमर सिंह गोदारा और डॉ. शिरीष शर्मा भी शामिल रहेंगे।

मरामा बीन की खासियत

- दक्षिणी अफ्रीका की शुष्क क्षेत्रों में उगने वाली दलहनी-तिलहनी फसल।
- बेहद कम वर्षा और रेतीली भूमि में भी अच्छी वृद्धि।
- बीज में प्रोटीन और तेल की उच्च मात्रा।
- कंद (ट्यूबर) में स्टार्च प्रचुर मात्रा में।
- पशु चारे और मृदा संरक्षण, दोनों के लिए संभावनाशील।
- जलवायु परिवर्तन के दौर में शुष्क क्षेत्रों के लिए संभावित वैकल्पिक फसल।

पशु चारे के रूप में भी होगी उपयोगिता की जांच

अनुसंधान के दौरान शीघ्र फूल आने वाली और अधिक उत्पादन देने वाली किस्मों की पहचान, बीज अंकुरण बढ़ाने की तकनीकों तथा उपज एवं पोषण गुणवत्ता का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाएगा। साथ ही ऊंट, गाय, भेड़ और बकरी जैसे स्थानीय पशुधन के लिए इसे चारे के रूप में उपयोगी बनाने की संभावनाओं का भी परीक्षण होगा।

मृदा संरक्षण और किसानों के लिए नया विकल्प

कुलगुरु डॉ. राजेंद्र प्रसाद दुबे ने बताया कि परियोजना में खाद्य सुरक्षा और पोषण मूल्यांकन के साथ-साथ चारे के विकल्प के रूप में इस फसल की उपयोगिता पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। मरामा बीन भूमि को ढककर रखने वाली फसल है, जिससे रेतीले क्षेत्रों में वायु से होने वाले मृदा कटाव को कम करने में भी मदद मिल सकती है। यदि परीक्षण सफल रहे, तो यह पश्चिमी राजस्थान के किसानों के लिए कम पानी में उगाई जाने वाली नई नकदी एवं खाद्य फसल का विकल्प बन सकती है। परियोजना के निष्कर्ष राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित किए जाएंगे तथा किसानों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे।